Daly College, Jr. School

हिन्दी सामूहिक कविता पाठ

Class:VI A 2025-26

नाम:_____

सुप्रभात ! हम कक्षा छठी 'अ' के विद्यार्थी है आज आप सभी के समक्ष हम सभी अपनी कविता प्रस्तुत करने जा रहे हैं। हमारी कविता का शीर्षक **'बारहमासा'** है | इसकी कवयित्री **महादेवी वर्मा** है |

माँ कहती अषाढ़ आया है
काले-काले मेघ घिर रहे,
रिमझिम बूँदें बरस रही हैं
मोर नाचते हुए फिर रहे।

फिर यह तो सावन के दिन हैं
राखी भी आई चमकीली,
नन्हे को राखी बाँधी है
माँ ने दी है चुन्नी नीली।

भादों ने बिजली चमकाकर
गरज-गरज कर हमें डराया,
क्या हमने चांई-मांई कर
इसलिए था इसे बुलाया।
गन्ने चटका-चटकाकर माँ
किन देवों को जगा रही है,
ये कुँवार तक सोते रहते
क्या इनको कुछ काम नहीं है।

दीये-तेल सब रामा लाया
हमने मिल बत्तियाँ बनाईं,
कार्तिक में लक्ष्मी की पूजा
करके दीपावली जलाई।

माँ कहती अगहन के दिन हैं
खेलो पर तुम दूर न जाना,
हमको तो अपनी चिड़ियों की
खोज खबर है लेकर आना।

पूस मास में सिली रज़ाई निक्की-रोज़ी बैठे छिपकर,
रामा देख इन्हें पाएगा
कर देगा इन सबको बाहर।

माघ मास सरदी के दिन हैं
नहा-नहा हम काँप थर-थर,
पर ठाकुर जी कभी न काँपे
उन्हें नहीं क्या सरदी का डर ?

फागुन आया होली खेली
गुझियाँ खाईं जन्म मनाया,
क्या मैं पेट चीरकर निकली
या तारों से मुझे बुलाया।

चैत आ गया चैती गाओ
माँ कहती बसंत आया है,
नए-नए फूलों-पत्तों से
बाग हमारा लहराया है।

अब बैशाख आ गई गरमी
खेलेंगे हम फव्वारों से,
बादल अब न आएँगे हमको
ठंडा करने बौछारों से।

माँ कहती अब जेठ तपेगा
निकलो मत घर बाहर दिन में,
हम कहते गौरइयाँ प्यासी
पानी तो रख दें आँगन में।

बाबू जी कहते हैं इनको
नया बरस है पढ़ने भेजो,
माँ कहती ये तो छोटे हैं
इन्हें प्यार से यहीं सहेजो।

धन्यवाद!

Daly College, Jr. School

हिन्दी सामूहिक कविता पाठ Class: VI 'B'

नाम : _____

आज हम कक्षा ६ ठी 'ब' के विद्यार्थी आपके समक्ष **'मेरा संकल्प अखंड भारत'** नामक कविता प्रस्तुत करेंगे, जिसके कवि **'श्री कुलदीप ठाकुर'** हैं।

मेरा अखंड भारत

हे! दिव्य पुरूष इस धरती के,
अपना इतिहास उठा तो जरा,
उन स्वर्णमयी आशाओं के, अब राष्ट्रदूत तू दीप जला,
'मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।
'मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।

आदिकाल से नवयुग तक सकल विश्व मे मान रहा,
इस पवित्रभूमि भारत का 'भूलोक' मे गुणगान रहा,
इस 'विश्वविजय' के पथ पर ही, हे वीर तू अब चलता जा,
मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।
मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।

महाप्रलय सी मुश्किल हो या तूफान उठे क्षण-क्षण में,
असह्य वेदना उमड़ रही हो जीवन के पल-पल में,
अखंडता के महाव्रत को लेकर अब तू चलता जा,
मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।
मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।

भारत के यशगान की अनुपम, अनोखी रीत बने,
ये 'विश्वगुरु भारत' फिर से विशालतम जम्बूद्वीप बने,
स्वातंत्र्यवीर सावरकर जैसी सिंहगर्जना करता जा,
मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।
मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।

अज्ञात शत्रु अब द्वार खड़े हैं, अब उनसे लड़ना होगा,
चक्रसुदर्शन लेकर के फिर उनसे भिड़ना होगा,
विश्वशांति के लिए 'अश्वमेध यज्ञ' तू करता जा,
मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।
मेरा संकल्प अखंड भारत' इस लक्ष्य की ओर तू बढ़ता जा।

सदियों तक भारतभूमि ने अन्यायों का डंक सहा,
कैसे खंडित हुआ था भारत, ये भी एक कलंक रहा,
अब खोये गौरव को संचित फिर से करना होगा,
'हमारा संकल्प है अखंड भारत' इस ध्येय को लेकर बढ़ना होगा।
'हमारा संकल्प है अखंड भारत' इस ध्येय को लेकर बढ़ना होगा।

******----------******

Daly College , Jr. School Indore

सामूहिक कविता पाठ

Name ---------- Class &Section ----------

कृष्ण की चेतावनी

वर्षों तक वन में घूम-घूम,

बाधा-विघ्नों को चूम-चूम,

सह धूप-घाम, पानी-पत्थर,

पांडव आए कुछ और निखर।

सौभाग्य न सब दिन सोता है,

देखें, आगे क्या होता है।

मैत्री की राह बताने को,

सबको सुमार्ग पर लाने को,

दुर्योधन को समझाने को,

भीषण विध्वंस बचाने को।

भगवान् हस्तिनापुर आए,

पांडव का संदेशा लाए।

'दो न्याय अगर तो आधा दो,

पर, इसमें भी यदि बाधा हो,

तो दे दो केवल पाँच ग्राम,

रक्खो अपनी धरती तमाम।'

हम वहीं खुशी से खाएंगे,

परिजन पर असि न उठाएंगे।

दुर्योधन वह भी दे ना सका,

आशीष समाज की ले न सका,

उलटे हरि को बाँधने चला,

जो था असाध्य, साधने चला।

जब नाश मनुज पर छाता है,

पहले विवेक मर जाता है।

हरि ने भीषण हुंकार किया,

अपना स्वरूप विस्तार किया,

डगमग-डगमग दिग्गज डोले,

भगवान कुपित होकर बोले—

"जंजीर बढ़ा कर साध मुझे,

हाँ, हाँ दुर्योधन! बाँध मुझे।

यह देख, गगन मुझमें लय है,

यह देख, पवन मुझमें लय है,

मुझमें विलीन झंकार सकल,

मुझमें लय है संसार सकल।

सब जन्म मुझी से पाते हैं,

फिर लौट मुझी में आते हैं।

जन्म-मरण का संहार मैं,

जग का पालनहार मैं,

अखिल विश्व का रचयिता हूँ,

मैं ही हूँ, मैं ही हूँ, मैं ही हूँ!"

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

Daly College, Jr. School

हिन्दी सामूहिक कविता पाठ Class: VI CI

नाम : _____

नमस्ते! आज हम कक्षा ६ ठी 'सी आई' के विद्यार्थी आपके समक्ष हिन्दी के प्रख्यात कवि **'श्री रामधारी सिंह - दिनकर'** जी के द्वारा रचित महाकाव्य 'रश्मिरथी' का एक छोटा-सा अंश **'काँटों में राह बनाते हैं'** प्रस्तुत करेंगे।

सच है, विपत्ति जब आती है,

कायर को ही दहलाती है,

शूरमा नहीं विचलित होते,

क्षण एक नहीं धीरज खोते,

विघ्नों को गले लगाते हैं,

काँटों में राह बनाते हैं।

मुख से न कभी उफ कहते हैं,

संकट का चरण न गहते हैं,

जो आ पड़ता सब सहते हैं,

उद्योग-निरत नित रहते हैं,

शूलों का मूल नसाने को,

बढ़ खुद विपत्ति पर छाने को।

है कौन विघ्न ऐसा जग में,

टिक सके वीर नर के मग में

खम ठोंक ठेलता है जब नर,

पर्वत के जाते पाँव उखड़।

मानव जब जोर लगाता है,

पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसे लाली हो,
वर्तिका-बीच उजियाली हो।
बत्ती जो नहीं जलाता है
रोशनी नहीं वह पाता है।

पीसा जाता जब इक्षु-दण्ड,
झरती रस की धारा अखण्ड,
मेंहदी जब सहती है प्रहार,
बनती ललनाओं का सिंगार।
जब फूल पिरोये जाते हैं,
हम उनको गले लगाते हैं।

वाटिका और वन एक नहीं,
आराम और रण एक नहीं।
वर्षा, अंधड़, आतप अखंड,
पौरुष के हैं साधन प्रचण्ड।
वन में प्रसून तो खिलते हैं,
बागों में शाल न मिलते हैं।

कंकरियाँ जिनकी सेज सुघर,
छाया देता केवल अम्बर,
विपदाएँ दूध पिलाती हैं,
लोरी आँधियाँ सुनाती हैं।
जो लाक्षा-गृह में जलते हैं,
वे ही शूरमा निकलते हैं।